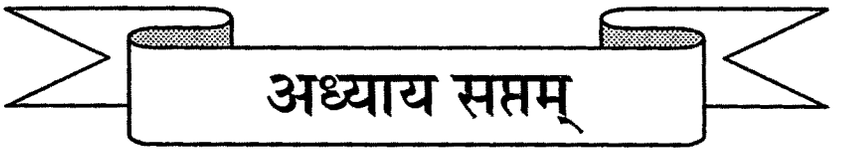

अध्याय सप्तम्

समग्र मूल्यांकन एवं उपलब्धियों पर विचार

सप्तम् अध्याय

समग्र मूल्यांकन एवं उपलब्धियों पर विचार

महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व के सम्बन्ध में इस विस्तृत शोध कार्य के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्षों की प्रस्तुति सम्भव है। सबसे पहला तथ्य जो उनके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में विशिष्ट मालूम पड़ता है, वह यह कि विवाह के बावजूद, उन्होंने स्वेच्छा से दाम्पत्य सम्बन्ध का परित्याग कर दिया। क्यों परित्याग किया? कोई दुर्व्यवहार या दुर्घटना हुई हो, इसकी चर्चा कहीं नहीं की। बहुत सम्भव है कि किन्हीं अनुलेख्य कारणों से दाम्पत्य सम्बन्ध रास नहीं आया हो। वैसे यह भी असम्भव नहीं कि दाम्पत्य की मानसिकता में वैषम्य रहा हो। महादेवी वर्मा की कविता से और उससे भी अधिक उनकी गद्य कृतियों से प्रकट होता है कि उनकी संवेदनशीलता गहन और व्यापक थी तथा उन्हें चेतन प्राणियों के प्रति ही नहीं, जड़ प्रकृति के प्रति भी, यद्यपि उनके लिए प्रकृति शायद ही जड़ हो, ममता थी। इस सार्वभौम लगाव के बावजूद वे अपने जीवन साथी से अलगाव चुनने के लिए तैयार हुई, तो कोई न कोई गम्भीर कारण रहा होगा। हो सकता है कि सक्रिय सीमा के

सुख में उन्हें अपने निर्वेयक्ति आदर्शवादी स्वभाव के कारण विरक्ति रही हो।

इसी तरह उनकी कृति के सम्बन्ध में जो पहला तथ्य ध्यान आकर्षित करता है वह यह कि उनकी कविता जितनी उद्वेगरहित है, उतनी ही उद्वेगपूर्ण उनकी वे कृतियाँ हैं जो गद्य में प्रस्तुत हुई है। यह स्थिति क्यों है? गद्य कृतियों में महादेवी वर्मा ने नारी जाति के प्रति युग-युग से होते आये हुए विषम व्यवहार के सम्बन्ध में बड़ी तीखी प्रतिक्रिया की अभिव्यक्ति की है। 'चाँद' पत्रिका के संपादकीय के रूप में जो लेख उन्होंने लिखे थे और बाद में जो 'श्रृंखला की कड़ियाँ' पुस्तक के रूप में छपे, वे तो नितान्त दूसरे ढंग के मालूम पड़ते हैं। उससे उनकी कविता की तुलना करें तो चकित रह जाना पड़ता हैउ और स्वाभाविक है कि यह विश्वास करने में कठिनाई होती है कि दोनों महादेवी वर्मा द्वारा लिखी हुई है। इस प्रसंग में पहली बार रामविलास शर्मा ने स्थिति स्पष्ट करने का बहुत कुछ सार्थक प्रयतन किया था। उन्होंने कहा था कि महादेवी वर्मा की अन्तर्दृष्टि कविता में भी वही है, जो गद्य कृतियों में है। फिर भी जो वैषम्य मालूम पड़ता है, वह इसलिए कि कविता की जो विधा उन्होंने चुनी है, उसके रूप-शिल्प के दबाव से उन्हें अपनी रचना-प्रक्रिया ऐसी रखनी पड़ी है, जिससे आवेग बिल्कुल ठंडा मालूम पड़ता है।

महादेवी वर्मा की कविता में नारी मुक्ति के साथ-साथ पराधीन देश की मुक्ति की चेना भी खोजी जा सकती है, क्योंकि इन दोनों की अभिव्यक्ति सूक्ष्यम सांकेतिक शैली में हुई है। वे अपनी कई कविताओं में ऐसी भावनाओं का संकेत करती हैं जो तपस्या या साधना से जुड़ी हुई मानी जा सकती हैं। उनका एक बहुत प्यारा प्रतीक 'दीपक' है। उनकी एक काव्यकृति का नाम 'दीपशिखा' है। कवि कालिदास को 'दीपशिखा कालिदास' कहा गया था। लेकिन उससे महादेवी का कोई सम्बन्ध मालूम नहीं पड़ता। महादेवी का दीपक या दीपशिखा तपस्या या साधना के प्रतीक के रूप में है। गौतम ने आत्मदीप होने की जो बात कही थी, उसे जोड़कर देखा जा सकता है। उसमें गाँधी की

तपस्या की साधना और तपस्या का प्रतिबिम्ब भी हो सकता है। महादेवी का कहना है कि उनका दीपक मधुर-मधुर जलता रहेगा और तब तक जलता रहेगा जब तक सबेरा नहीं हो जाता। सबेरा मुक्ति का प्रतीक माना जा सकता है- मुक्ति यानि स्वतंत्रता भारत की और मानवमात्र की। मानवमात्र की मुक्ति रहस्यात्मक भूमिका के कारण कवियित्री की निजी मुक्ति प्रतीत होती है, तो इसमें कुछ भी अटपटा नहीं। वस्तुतः महादेवी वर्मा मनुष्यमात्र के प्रति विशेष रूप से बेचारे और बेसहारे मनुष्यमात्र के प्रति करूणा से ओत-प्रोत मालूम पड़ती हैं। वे पशु-पक्षियों से भी गहरा भवात्क लगाव रखती हैं। सच तो यह है कि जड़-चेतना-सबसे-पूरे ब्रह्माण्ड से उनका अपनत्व था और उनके ब्रह्माण्ड में कुछ भी जड़ नहीं है चूँकि हर कण में चेतन का स्पन्दन है। इस तरह उनकी कविता में जो अस्फुट या अव्यक्त संकेत के रूप में है, वही बड़े उद्वेग के साथ स्फुट और व्यक्त रूप में उनके गद्य-कृतियों में अभिव्यक्त होता है।

महादेवी वर्मा ने आत्म संस्मरण के क्रम में कहा है कि पढ़ने के समय सुभद्रा कुमारी चौहान और उनका साथ था, तब वे कविताएँ लिखती थीं, उनमें राष्ट्रीय भावना की ओजस्वी अभिव्यक्ति रहा करती थी। तब की उनकी कविताएँ स्वतंत्रता-सेनानियों द्वारा गायी भी जाती थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि उनकी मुक्ति की चेतना का सम्बन्ध राष्ट्रीय पराधीनता से था। इसी तरह वे नारी मुक्ति के लिए भी चिन्तित रही हैं। फिर मानव मुक्ति का भी आदर्श उनका है। पर, यह सब उनकी कविता में सूक्ष्म संकेतों के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। एक बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें दुःखाद का कवि माना जाता है। उनमें दुःखवाद क्यों है? उनका अपना कहना यह है कि उनके दुःखवाद के मूल में गौतम बुद्ध की करूणा है। डॉ० नगेन्द्र इसे मानना जरूरी नहीं समझते। वैसिगमण्ड फ्रायड के मनोविश्लेषण की प्रक्रिया के सहारे बतलाना चाहते हैं कि दाम्पत्य जीवन में अतृप्ति के कारण महादेवी वर्मा में

जो कुण्ठा है, वही दु:खवाद के रूप में प्रकट हुई है। यदि यह बात होती तो महादेवी की कविता में उनके अवचेतन की कुछ अटपटी झलकियाँ जरूर मिलतीं। उनकी कविता संयत, सौम्य और शान्त स्वर में प्रस्तुत हुई हैं। उनमें कोई तनाव नहीं दिखलाई पड़ता। रमेशचन्द्र साह ने बहुत ठीक कहा है कि उनकी कविता एक तरह से स्थिर है। यदि उस कविता में व्यक्तिगत कुण्ठा का संदर्भ होता तो यह स्थिति शायद ही होती। प्रतीत यह होता है कि इस संसार के दु:ख की अभिव्यक्ति ही आत्मिक दु:ख के रूप में हुई है। कवि की वेदना वही है जो वेदना चारों ओर फैली हुई है। अवश्य इसका अवयव रहस्यात्मक अवयव भी है, पर महत्त्वपूर्ण जिज्ञासा यह है कि मुक्ति की तड़प से भरी हुई आकांक्षा के बावजूद उनकी कविता में शान्त स्वर क्यों है? यह तो है कि वे खिलखिलाते फूलों से अधिक मुरझाते हुए फूलों को पसन्द है। उन्हें जलता हुआ दीपक और गलती हुई बदली के साथ तादात्म्य मालूम होता है। इस स्थिति में सम्भावना यह है कि वे संसार से दु:ख मिटाने के लिए संकल्प करके चली हैं। ध्यान देने की बात यह है कि दु:ख मिटाने के लिए वे संघर्ष के बदले साधना का, दूसरों को प्रहार करने के बदले स्वयं पीड़ा झेलने का मार्ग चुनती हैं। यह प्रतीति स्वाभाविक है कि उन पर महात्मा गाँधी की साधना को जो सत्य के आग्रह के साथ-साथ सबके प्रति, यहाँ तक कि शत्रु के प्रति भी प्रेम से जुड़ी हुई थीं और जिसे ही अहिंसा के रूप में उजागर किया गया था, प्रभाव पड़ा है। स्वयं महादेवी ने गौतम बुद्ध के प्रभाव का उल्लेख किया है। जो तात्कालिक संदर्भ में गाँधीवादी प्रयोग का मालूम पड़ता है। इस स्थिति में यह कहना अधिक उचित है कि महादेवी वर्मा के दु:खवाद का सम्बन्ध किसी तरह की कुण्ठा नहीं है। उन्हें अटूट आस्था है कि सद्भावना के सहारे हर तरह का दु:ख दूर किया जा सकता है।

महादेवी वर्मा की कविता प्रगीतों के रूप में है। यह भी कह सकते हैं कि छायावाद के कवि में से किसी ने केवल प्रगीतों की रचना की तो वे

महादेवी वर्मा ही है। उनके प्रगीत अपेक्षाकृत छोटे हैं। उनकी रचना-प्रक्रिया बर्तुल है। हर प्रगीत की पहली पंक्ति में एक अभिप्राय की प्रभावशाली प्रस्तुति रहती है। बाद में जो बन्ध आते हैं वे उसी अभिव्यक्ति की प्राय: सम्पुष्टि करते हैं। प्रगीतों में भी लघु-लघु बिम्ब होते हैं। वे अधिकतर समग्रता में परस्पर इस प्रकार गुम्फित होते हैं कि बहद्-बिम्ब का आकर्षण प्राप्त कर लेते हैं। ध्यान देने की बात यह है कि महादेवी वर्मा जिन शब्दों में अपनी कविता की प्रस्तुति करती है, वे गहन सांस्कृतिक चेतना से प्रदीप्त मालूम पड़ती हैं। वे अधिकतर तत्सम है। उनकी कविता में अंग्रेजी और उर्दू-फारसी के शबद बिल्कुल ही नहीं है। उनका हर प्रगीत सघन लय से भरा हुआ है।

महादेवी वर्मा ने बंगाल के अकाल से सम्बन्धित कविताओं का एक संकलन 'बंग-दर्शन' पुस्तक के रूप में संवादित किया था। महात्मा गाँधी के बलिदान पर भी उन्होंने कविताएँ लिखीं थी। भावुकता से भरे हुए ऐसे अवसरों पर भी उन्होंने संयम का अद्भुत परिचय दिया है। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं कि हिन्दी के आधुनिक कवियों में अपनी भावना और आवेग पर जितना नियंत्रण महादेवी वर्मा का रहा है, शायद ही किसी का हो। यह भी लक्ष्य करने की बात है कि महादेवी वर्मा ने कुछ ही समय तक कविता की रचना की हैं बाद में वे रूक गयीं। इसका कारण शायद यह है कि वे तात्कालिक घटनाक्रम से उभरी हुई संवेदना या उत्तेजना से अपने को निरन्तर बचाती रही थीं। उन्हें जो कुछ कहना था वह सब सांकेतिक तौर पर कुछ ही समय में कह दिया था।

महादेवी वर्मा ने गद्य में जो संस्मरण, शब्द-चित्र और लेख प्रस्तुत किये हैं, उनमें आवेग या उद्वेग की उन्मुक्त अभिव्यक्ति है। उन्होंने गद्य-रचनाओं के विषय के रूप में जिन्हें चुना है, वे मनुष्य के रूप में कमजोर और बेसहारा लोग हैं- वैसे लोग जो समाज में उच्छिष्ट की तरह मालूम पड़ते हैं। इसी तरह छोटे-छोटे पालतू जानवरों के बारे में भी लिखा है। उन्होंने सर्जन

के अपने सहयात्रियों के सम्बन्ध में भी बड़े मार्मिक ढंग से लिखा है। यह तो है ही कि उनकी गद्य कृतियां में 'श्रृंखला की कड़ियाँ' की नारी सम्बन्धी लेख बड़े उग्र तेवर में लिखे हुए मालूम पड़ते हैं, फिर यह दुहराना जरूरी है कि बाहर से देखने पर काव्य-कृतियों और गद्य-कृतियों में भारी वैषम्य का अहसास होता है।

महादेवी वर्मा को आध्यात्मिक संदर्भ में रहस्यवादी मानने की प्रवृत्ति प्रचलित रही हैं उनकी तुलना मीरा से भी की गयी है, यहाँ तक कि उन्हें 'आधुनिक मीरा' भी कहा गया है। पर तथ्य यह मालूम पड़ता है कि वे लौकिक चेतना से गहरे स्तर पर जुड़ी हुई रही हैं। आध्यात्मिक रहस्यवाद उनके लिए प्राय: कौशल की तरह है। वस्तुत: उनकी निष्ठा मानव मूल्यों के प्रति मालूम पड़ती है। वे मनुष्य और मनुष्य में फर्क नहीं मानतीं और कोई अमीर हो या गरीब, सुन्दर हो या अपाहिज, सबके बीच भाईचारे का सम्बन्ध मानती हैं। इसी तरह स्वतंत्रता उनके लिए ऐसा मूल्य है, जिसके सम्बन्ध में वह कोई समझौता नहीं कर सकतीं। इस प्रसंग में एक घटना का उल्लेख महत्वपूर्ण होगा। सन् 1975 में इन्दिरा गाँधी ने देश में आपात्काल लागू करते हुए मौलिक स्वतंत्रताओं के संवैधानिक प्राविधानों को स्थगित कर दिया था। इससे महादेवी वर्मा को इतना धक्का लगा कि राष्ट्रपति से प्राप्त विशिष्ट अलंकरण लौटा दिया था। इसी क्रम में रवीन्द्रनाथ ठाकुर स्मरण आते हैं, जिन्होंने जलियावाला बाग की घटना के बाद ब्रिटिश साम्राज्य से प्राप्त 'नाइट हूड' की उपाधि लौटा दी थी। इस तरह यह अनुभव किया जा सकता है कि महादेवी वर्मा में गहरी लौकिक चेतना थी और वे स्वतंत्रता, समता और बंधुता जैसे मानव-मूल्यों के प्रति अटल निष्ठा रखती थी।